कैप्टन अजय बनाम हुड्डा, झगड़ा सारा लूट का

-वाई. के. रज्जन

हरियाणा में जब बीजेपी सरकार काम करने की बजाय लोकतंत्र का गला घोंटने में लगी हुई है तो उस समय हरियाणा कांग्रेस के नेता एक सशक्त विपक्ष की भूमिका निभाने की बजाय एक दूसरे की छीछालेदर में जुटे हुए हैं। हरियाणा के शासनकाल में कई विभागों का मंत्री पद संभालने वाला कैप्टन अजय यादव अपने ही पूर्व सीएम भूपेंद्र सिंह हुड्डा पर करप्शन के संगीन आरोप लगाता है तो अगले दिन हुड्डा उसको लानत भेजते हुए और आरोप लगाते हुए नजर आते हैं।

कैप्टन के आरोप और उसकी आड़ में अपनी नेतागीरी

हुड्डा के राज में करप्शन में शामिल रहा अजय यादव आज खुद को सबसे बड़ा ईमानदार नेता बता रहा है। उसका कहना है कि हुड्डा के शासनकाल में जमीनों की सीएलयू का खेल हुआ और इसमें हुड्डा शामिल थे। ...मैं मंत्री था लेकिन फाइलें मेरे पास नहीं आती थीं बल्कि सीधे सीएम यानी उस समय हुड्डा के पास जाती थीं। पूरा सीएम दफ्तर भ्रष्टाचार का अड्डा बना हुआ था। ...उसका यह भी कहना है कि हुड्डा ने अपनी मर्जी के हिसाब से विधानसभा चुनाव और लोकसभा चुनाव में टिकट बंटवाए, इस वजह से पार्टी को हार का मुंह देखना पड़ा।...कैप्टन ने इधर एक सपना और देखना शुरू किया है...उसका कहना है कि कांग्रेस सरकार बनने की स्थिति में अगला सीएम अहीरवाल बेल्ट यानी दक्षिण हरियाणा से बनना चाहिए। उसका कहना है कि अभी तक सारे सीएम रोहतक, भिवानी, हिसार,

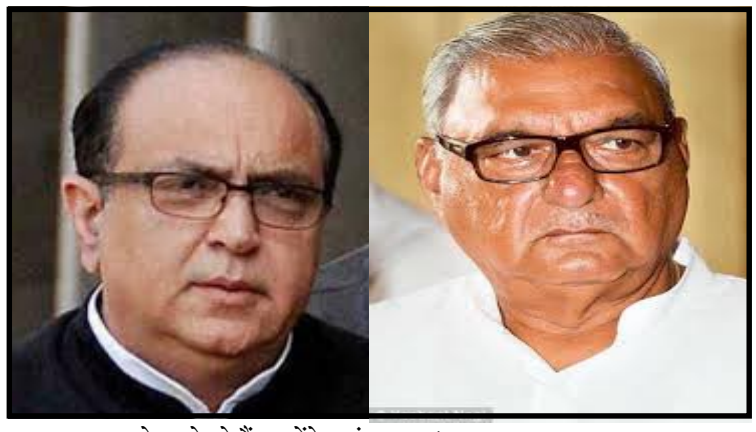

करनाल साइड से बनते रहे हैं, उन्होंने वहां का विकास किया और दक्षिण हरियाणा को नजरअंदाज किया। कैप्टन अजय यादव कांग्रेस से कोई एक दिन में नाराज नहीं हुए, उनकी नाराजगी की कई वजहें हैं। पिछले लोकसभा चुनाव में अपने पुत्र चिरंजीव यादव के लिए गुड़गांव लोकसभा से टिकट मांगा लेकिन भूपेंद्र हुड्डा ने बीच में भांजी मार दी और टिकट कटवा दिया। ....कैप्टन ने जब देखा कि लोकसभा चुनाव में कांग्रेस बुरी तरह हार गई है और विधानसभा चुनाव में भी हार के रास्ते पर है तो उसने अंतिम क्षणों में शहीद कहलाने के लिए हुड्डा मंत्रिमंडल से 29 जुलाई 2014 को इस्तीफा दे दिया। यह व्यक्ति हुड्डा के शासनकाल में 2005 से मंत्री था लेकिन इसको अक्ल 2014 में आई। ...इस दौरान बतौर मंत्री इसने जो अरबों की संपत्ति जमा की, उसके लिए इसने एक बार भी न तो हुड्डा का और न ही अपनी कांग्रेस पार्टी का धन्यवाद अदा किया। उस करप्शन का हिसाब कैप्टन देना नहीं चाहता लेकिन कांग्रेस में मनमाफिक गोटियां फिट न होने पर अब हुड्डा के भ्रष्टाचार की पोल खोल रहा है।

हुड्डा की राजनीति

गांधी परिवार का दरबारी होने के बावजूद भजनलाल ने अपने वक्त में हुड्डा की राजनीति को कभी आगे नहीं बढ़ने दिया लेकिन जब राजीव गांधी ने भजनलाल से पिंड छुड़ाने के लिए हुड्डा की ताजपोशी कराई तो हुड्डा ने अपनी राजनीति के दम से भजनलाल परिवार को कांग्रेस से विदा कराया। ...और दस साल तक गांधी परिवार और उसके दामाद की ऐसी सेवा कि पूरी कांग्रेस को गर्त में मिला दिया। खैर, कांग्रेस गर्त में जाए या उबरे, इसमें हमारी दिलचस्पी नहीं है, बात हो रही है हरियाणा कांग्रेस के उन अवसरवादी नेताओं की, जिन्होंने हुड्डा के भ्रष्टाचार को होते देखा, जिन्होंने बिल्डरों की सरकार में सीएलयू के लिए किसानों की जमीन को बर्बाद होते देखा और चुप रहे।

सोनिया गांधी के दामाद रॉबर्ट वाड्रा को हरियाणा में फलते फूलते देखा और खामोश रहे। झज्जर में किसानों की जमीन का अधिग्रहण लोगों को याद नहीं...मुकेश अंबानी की कंपनी को स्पेशल इकोनॉमिक जोन बनाने के लिए झज्जर में जमीन हुड्डा ने दिलाई लेकिन जब किसान नेता अपनी बात लेकर राहुल गांधी तक जा पहुंचे तो राहुल के दबाव पर हुड्डा को वह सारा नोटिफिकेशन रद्द करना पड़ा और मुकेश अंबानी अपना बोरिया बिस्तर समेट कर भाग खड़ा हुआ।

हुड्डा के राज में सीएलयू का खेल काफी दिलचस्प होता था। किसानों की जमीन लेने के लिए सेक्शन 4 व 6 जारी कर दिया जाता था और बिल्डर संबंधित किसान से बात कर उस जमीन को खरीद लेते थे। बाद में सरकार सेक्शन 4 व 6 वापस ले लेती थी। नहरपार फरीदाबाद, गुड़गांव, सोनीपत, रेवाड़ी, बावल, भिवानी, हिसार, करनाल समेत तमाम शहरों में यही कहानी दोहराई जाती रही। इसी के जरिए रातोंरात बीपीटीपी, डीएलएफ जैसे बिल्डर मालामाल हो गए। रॉबर्ट वाड्रा ने गुड़गांव में कंपनी खोल ली। वाड्रा की कंपनियों ने जो जमीन खरीदी, वो उसने डीएलएफ को बेच दी। किसी कांग्रेसी ने इसके खिलाफ आवाज नहीं उठाई। न हरियाणा में और न राष्ट्रीय स्तर पर। कुल मिलाकर निष्कर्ष यह निकलता है कि हरियाणा में भ्रष्टाचार के इस हमाम में न तो कैप्टन अजय यादव राजा हरिश्चंद्र की औलाद हैं और न ही भूपेंद्र सिंह हुड्डा। अगर दोनों ...मौसेरे भाई न होते तो कांग्रेस की कम से कम हरियाणा में यह हालत न होती। चौटाला के चंगुल से जिस तरह हरियाणा आजाद हुआ था, उसका जनाजा कांग्रेसियों ने 10 साल में निकाल दिया। हालात ये हैं कि जब राज्य के लोग बीजेपी से तंग आकर कांग्रेस से एक सशक्त भूमिका निभाने की उम्मीद कर रहे है तो उस समय कहीं कैप्टन और हुड्डा की लड़ाई तो कहीं हुड्डा और अशोक तंवर की लड़ाई। एक तीसरा केंद्र बंसीलाल की बहू किरण चौधरी का भी है जो आजकल गांधी परिवार के नजदीक जाने की कोशिश में हैं। यह सारा झगडा लूट का है। हर खेमा अपनी-अपनी बेहतर लूट को सुनिश्चित करने की फिराक में है।

विरोध की राजनीति के मायने

कैप्टन यादव दरअसल, हुड्डा का विरोध बहुत सोची समझी रणनीति के तहत कर रहा है। अहीरवाल के नेताओं में हमेशा ले ललक रही है कि उन्हें राज्य की राजनीति में अलग पहचान मिले। इसकी कोशिश वे जब-तब करते रहे हैं। राव वीरेंद्र सिंह अगर किसी को याद हो तो उन्होंने कांग्रेस से बगावत कर अपनी पार्टी खड़ी कर ली थी। राव इंद्रजीत जो राजीव गांधी से दोस्ती का दम भरते थे, अचानक इतना ऊबे कि बीजेपी में चले गए और अचानक हरियाणा में भाजपा की सरकार बनने पर मुख्यमंत्री बनने का सपना देखने लगे। इसके लिए दरबारी पत्रकारों से खबरें तक प्लांट कराई गईं कि बस सीएम बनने ही वाला हूं। ...कैप्टन अजय यादव देर सवेर कांग्रेस से अलग होकर अपनी पार्टी बनाने की घोषणा करेगा। वह दक्षिण हरियाणा से भेदभाव को मुद्दा बनाकर इस पार्टी की स्थापना करेगा। लेकिन यह सारा काम चुनाव के आसपास होगा। अभी तो सिर्फ भेदभाव और हुड्डा को निशाना बनाने की कार्यवाही चलती रहेगी। ...एक थे रघु यादव...उन्होंने इसी तरह की राजनीति की थी, उनके समय में भी दक्षिण हरियाणा से भेदभाव की आवाज उठती लेकिन अंत में वह विधायक बनकर खुश हो गया और दक्षिण हरियाणा से राजनीतिक भेदभाव का मुद्दा भूल गया। कैप्टन भी अब अपने लड़के चिरंजीव का पैर जमाने के लिए यह सारे पैंतरे चल रहा है। जिस दिन इन्हें कुर्सी मिल जाएगी यानी भ्रष्टाचार की गंगा फिर से बहाने का मौका मिल जाएगा, उस दिन ये भी दक्षिण हरियाणा से भेदभाव का तथाकथित मुद्दा भी भूल जाएंगे।

हरियाणा का भविष्य अंधकारमय

बीजेपी के नेतृत्व में हरियाणा का भविष्य अंधकारमय है। ऐसे में कांग्रेस का कमजोर होना अफसोसनाक है। हर जिले में मुद्दों की भरमार है लेकिन उन मुद्दों को उठाने की बजाय कांग्रेसी अभी भी भोगविलास में डूबे हुए हैं या उनके लड़के पुलिसवालों को मारते-पीटते घूमते हैं। जनता ने जिन उम्मीदों में बहकर संघियों (आरएसएस) को वोट दिया था, अब वह पछता रही है। जनता को मूल मुद्दों से भटकाने के लिए बीजेपी और आरएसएस के लोग आए दिन कोई न कोई बयानबाजी करते ही रहते हैं लेकिन दूसरी तरफ सशक्त विपक्ष न होने की वजह से जनता बीजेपी के भंवरजाल में और जकड़ती जा रही है।

धूर्तता व लफ्फ़ाजी द्वारा भ्रम फैलाने वाले मोदी

झूठ व भ्रम के द्वारा सत्ता पर पहुंचने वाली भाजपा पार्टी व राष्ट्रीय सेवक संघ की पाठशाला से निकलकर सत्ता शिखर पर पहुंचने वाले देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने झूठ व भ्रम फ़ैलाने में देश की अन्य पूंजीवादी पार्टियों को पीछे छोड़ दिया है। 15 अगस्त के लाल किले से अपने भाषण में मोदी जी कहते हैं कि देश में सम्प्रदायवाद व जातिववाद को पनपने नहीं दिया जायेगा। 15 महीने की सरकार पर एक भी आरोप भ्रष्टाचार का नहीं लगा है क्योंकि हमने काले धन पर कठोर कानून बनाया है। इसके साथ ही पूर्व सैनिकों को वन रैंक वन पेंशन पर धीरज रखने की अपील करते हुए तमाम विभागों के नाम बदलने की जरूरत है। व उन्हें बदल देने की वकालत की। जिसमें योजना आयोग का नाम नीति आयोग कर दिया।

अब हम इनकी बातों की हकीकत में जायें तो मोदी जी दुनिया के सबसे बड़े धूर्त साम्राज्यवादियों के सरगना अमेरिकी राष्ट्रपति से भी धूर्तता व लफ्फ़ाजी में आगे निकल गये हैं। साम्प्रदायिकता की विष बेल फ़ैलाने का काम इनकी पार्टी व इनके सहयोगी संगठन शिवसेना, विश्व हिन्दू परिषद, बजरंग दल, आरएसएस लगातार कर रहे हैं। साम्प्रदायिकता की जनवरी 2015 से मई तक 287 घटनाएं घटी हैं जिसमें 43 लोग मारे गये तथा 961 लोग घायल हुए है। जबकि मनमोहन के शासन काल वर्ष 2014 में जनवरी से मई तक 232 घटनायें जिसमें 32 लोग मारे गये तथा 70 लोग घायल हुए। इस तरह केन्द्रीय गृह मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार मोदी सरकार के कार्यकाल में 24 प्रतिशत वृद्धि साम्प्रदायिक घटनाओं में हुई है जो मोदी की लफ्फ़ाजी को बयां करती है। वैसे तो आरएसएस के जन्म से ही उसकी सोच ही साम्प्रदायिक रही है व उसी सोच के आधार पर पूरे देश में भ्रम फ़ैलाया गया कि हमारी गरीबी व बेरोजगारी का कारण मुस्लिम हैं क्योंकि मुस्लिम ज़्यादा बच्चे पैदा करते हैं। और देश को मुसलमानों से ख़तरा है हिन्दू एक नहीं हुए तो देश में मुसलमानों का राज आ जायेगा। देश में हिन्दुओं का राज रखना है तो भाजपा की सरकार बनायें क्योंकि भाजपा ही हिन्दुओं की सुरक्षा करेगी। मुस्लिम ज़्यादा बच्चे पैदा करते हैं जिसमें बेरोज़गारी व महंगाई बढ रही है। आज़ादी के दौर में गांधी ने मुस्लिमों को रोक लिया जिससे हमारे देश में महंगाई, बेरोजगारी बढ़ी है। मुस्लिम नहीं होंगे तो देश से बेरोज़गारी खत्म हो जायेगी। इस सोच का प्रचार हिन्दूवादी संगठन कर रहे हैं। सबसे बड़ा झूठ मोदी ने देश की जनता के सामने बोला है कि हमने देश का विकास किया है। इस देश के पूंजीपति, उद्योगपति, व्यापारी, सट्टेबाज़, जमाखोर तथा विदेशी कम्पनियों की दौलत बढाने के लिये मोदी सरकार द्वारा किसानों की ज़मीनों को छीनकर उद्योगपतियों को दे देना, मज़दूरों के सारे कानूनों को उदार बनाना, मज़दूरों को गुलामी अवस्था में धकेल देता है जिससे देश के चंद उद्योगपतियों का विकास ही सम्पूर्ण देश का विकास बताना लफ्फ़ाजी व धूर्तता के सिवा कुछ नहीं है। लुटेरे चाहें देशी हों या विदेशी इनको ध्वस्त किये बिना मेहनतकशों की मुक्ति नहीं होगी।

-के.पी.सिंह

तुर्की-ब-तुर्की / मोदीगण किन्हें पाकिस्तान भेज रहे थे!

''मोदीगण किन्हें पाकिस्तान भेज रहे थे!

''देशद्रोहियों को पाकिस्तान भेजो- आमिर खान, शाहरूख खान, आजम खान, मणिशंकर अय्यर, सलमान खुर्शीद इरफ़ान हबीब, मार्केंडेय काटजू, लव जिहादी, लालकृष्ण आडवाणी, सुधीन्द्र कुलकर्णी...'' -मोदी गण

''हमारा कहना है-

बेकार ही साध्वी प्राची, योगी आदित्य नाथ, साक्षी महाराज, निरंजन ज्योति वगैरह को मीडिया दोष देता रहा। अब पता चला कि वे किन्हें पाकिस्तान भेजने की बात कर रहे थे। विदेश मन्त्री सुषमा स्वराज अभी-अभी पाकिस्तान से लौट कर आई हैं। प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी के पाकिस्तान जाने की घोषणा हो चुकी है।

लगे हाथ संघ, विहिप और शिव सेना के बड़बोलों को यह भी बता देना चाहिये कि उनके कहे बिना जो लाखों लोग हर वर्ष सड़क, रेल और वायुमार्ग से पाकिस्तान जाते रहते हैं, उन्हें किस श्रेणी में रखा जायेगा? द्रोहियों की या देशभक्तों की? आडवाणी जी बिना इनसे पूछे पाकिस्तान हो आये। सुषमा जी ने भी इनसे पूछने की जरूरत नहीं समझी। मोदी जी भी कौनसा इनसे पूछ कर जायेंगे? अब तो इन्हें बस यह बता देना चाहिये कि पाकिस्तान भेजने की धमकी ये किसके कहने से जारी करते रहते हैं।

भाजपाई सरकारों में आतंकवादियों को सरकारी जहाज पर बैठा कर पाकिस्तान भेजने की परम्परा रही है। याद होगा कि अटल बिहारी वाजपेयी के प्रधान मंत्री होते हुए विदेश मंत्री जसवंत सिंह ने स्वयं खुंखार आतंकवादियों को सुरक्षित कांधार के रास्ते पाकिस्तान पहुंचाया था। अब भी सुषमा स्वराज के पाकिस्तान जाने का रास्ता मोदी के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोवल की बैंकाक में पाकिस्तानी सुरक्षा सलाहकार से वार्ता से ही खुला। क्या इसका खुलासा नहीं होना चाहिये कि डोवल या सुषमा को पाकिस्तान से बतियाने में संघ परिवार की सहमति है या नहीं।

क्या यह भी बताने की जरूरत है कि दाउद इब्राहीम एंड कम्पनी भी संघ परिवार के कार्यकलापों के चलते ही पाकिस्तान गयी। वहां से उन्होंने भारत के विरुद्ध शैतानी खेल चलाया हुआ है। संघ परिवार का अब का 'पाकिस्तान भेजो' अभियान क्या इन्हीं खतरनाक संभावनाओं का स्रोत सिद्ध नहीं होगा? अगर वास्तव में पाकिस्तान आने जाने में ही देशभक्ति दिखानी है तो मोहन भागवत को पाकिस्तान के हवाले कर बदले में हाफ़िज सईद को भारत लाया जाय। इसी तरह दाऊद इब्राहिम को भारत लाने के लिये योगी आदित्य नाथ को पाकिस्तान भेजा जाय। मंजूर है?